Name → Maitreyya Kumar Shukla.

UPSC roll no. → 0418573.

91/250

Q→1→ अल नीनो व ला नीना क्या है? ला नीना भारत में मौसम की घटनाओं को कैसे प्रभावित करता है? (150 w, 10 M)

अल-नीनो व ला-नीना की घटनाएँ भारत के मानसून को प्रभावित करती हैं। हिंद प्रशांत क्षेत्र में प्रचलित पवनों में परिवर्तन से ही दोनों घटनाएँ सम्बद्ध हैं।

अल-नीनो की घटना में दक्षिण पूर्वी व्यापारिक पवन अपनी दिशा बदलकर चिली तट पर तटवर्ती हो जाती है तो ला-नीना में द० पू० व्यापारिक पवन और सशक्त हो जाती है।

दोनों परिघटनाओं को संक्षिप्त में पहले स्पष्ट करें।

ला-नीना का भारतीय मौसम पर प्रभाव→

1) द० पू० पवनों के ज्यादा सशक्त होने से भारत में मजबूत मानसून का आगमन होता है।

2) भारत में मजबूत मानसून से लगभग सभी परिवर्तन सम्बद्ध हैं - जैसे वर्षण का बढ़ना, ताप व दाब का उस अवधि में कम होना इत्यादि।

अल-नीनो भी भारतीय मौसम पर प्रभाव डालता है जो ला-नीना के विपरीत है। इस प्रकार दोनों घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन भारत में बेहतर मानसून प्रबंधन में सहायक होगा।

उपयुक्त आरेख द्वारा प्रभावी बनाया जा सकता है।

2.5

Q.2 → हालाँकि प्रवाल ~~भित्तियाँ~~ भित्तियाँ समुद्र तल के छोटे हिस्से को कवर करती हैं, पर वे लोगों को बहुत अधिक लाभ देती हैं। इस संबंध में प्रवाल विरंजन तथा उसके प्रभाव। (150 W, 10M)

प्रवाल भित्तियाँ समुद्र तलों में कुछ खास परिस्थितियों में पायी जाने वाली संरचनाएँ हैं जो प्रवाल नामक जीवों के अवशेषों पर निर्मित होती हैं तथा बड़ी जलीय आबादी को आवास देती हैं।

प्रवाल भित्तियों की (चित्र/map) दें

वैश्विक स्तर पर समुद्र तल का बहुत कम हिस्सा ही प्रवाल भित्तियों से घिरा है, पर इनसे हमें कई लाभ प्राप्त होते हैं :-

1) यह दुनिया के सर्वाधिक जैव विविधता

प्रवाल भित्तियों का स्थान कहाँ

वाले क्षेत्रों में है (समुद्र का वर्षावन), जो पर्यावरण संतुलन में भूमिका निभाते हैं।

2) इनके कई आर्थिक उपयोग भी हैं, जैसे - फायर कोरल्स का घरों में व कास्मेटिक के रूप में प्रयोग, पर्यटन हेतु इन स्थानों की लोकप्रियता।

प्रवाल विरंजन का प्रभाव?

परंतु लगातार बढ़ते समुद्री प्रदूषण, ताप व लवणता के कारण इन भित्तियों में जीवन के महत्वपूर्ण तत्व 'जूजेंथेली' नामक जीवों की मृत्यु हो रही है, जो प्रवाल विरंजन का कारण है।

प्रवाल विरंजन को रोकना हमारी जरूरत है, नहीं तो वही

2

जैव - विविधता हानि, आर्थिक नुकसान तथा अन्य कई खतरे हमारे सामने होंगे। → भविष्योन्मुखी निष्कर्ष है।

Q→3 → "प्रत्येक गर्मी की शुरुआत के बाद से भारत के बड़े हिस्सों में लगातार हीट वेव की स्थिति दर्ज की गई है।" इस आलोक में हीट वेव की परिभाषा देकर कारण बताएं। (150w, 10m)

हीट वेव का अर्थ किसी क्षेत्र में तापमान के सामान्य से ज्यादा होने से है। मैदानी क्षेत्रों में तापमान 40°C से ज्यादा तथा पर्वतीय क्षेत्रों में 30°C से ज्यादा हो जाने की स्थिति को हीट वेव कहते हैं।

हीट वेव की परिभाषा (स्पष्ट है)

↓

अच्छी शुरुआत

लगातार हो रहे जलवायु परिवर्तन के दौर में उत्तर भारत के साथ-साथ दक्षिण भारत के हिस्सों में भी यह घटना देखी जाती रही है। यहाँ तक कि दुनिया के सबसे ठंडे प्रदेश जैसे- ब्रिटेन व कनाडा भी हाल में इससे परेशान दिखे हैं।

→ **कारण →**

1) मानव का खराब शहरी नियोजन जो 'कंक्रीट का जंगल' बन गया है जहाँ ऊष्मा भंडारण होता है।

2) लगातार हो रहे कार्बन उत्सर्जन से धरती का तापमान बढ़ते ऊष्मा जैसा कि आई. पी. सी. सी. (IPCC) ने अपनी

छठी आकलन रिपोर्ट में भी बताया है।

3) भारत में 'लू' जैसी गर्म हवाओं की पहले से उपस्थिति।

मानवजनित एवं प्राकृतिक दोनों कारकों की

मानव द्वारा लगातार जैव-विविधता क्षति का एक दुष्परिणाम। हीट वेव भविष्य में पुनः जैव-विविधता क्षति करेगा जो मौसम को और गर्म करेगा तथा एक कुचक्र चलता जाएगा, जिसे नियंत्रित करने की जरूरत है।

स्तुरताओं एवं उपायों के आलोक में निष्कर्ष दें।

3

Q.4→ सुनियोजित शहरों का निर्माण सिंधु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक था। स्पष्ट कीजिए। (150 w, 10m)

मानव सभ्यता की प्रारंभिक संस्कृतियों में एक सिंधु घाटी सभ्यता अपनी उत्कृष्ट मूर्ति कला, एक प्रकार की माप तौल व्यवस्था, विदेशों से व्यापार तथा महिलाओं की प्रजा जैसी कई विशेषताओं हेतु विशेष स्थान रखती है।

काल क्रम ?

IVC की नगर नियोजक विशेषताओं से शुरुआत करें।

परंतु इन सबसे महत्वपूर्ण सिंधु घाटी का नगर नियोजन था →

1) पक्की ईंटों से दुनिया में पहली बार घरों का निर्माण।

2) निचली दीवारों पर खिड़कियाँ नहीं (निजता)

3) दो मंजिला मकान तथा ऊपर जाने हेतु सीढ़ियाँ।

4) हर घर में जल निकास हेतु नाली, जो बाहर मेनहोल तक जाती थी।

5) समकोण पर एक दूसरे को काटती सड़कें।

ऐसी वैज्ञानिक नगरीय व्यवस्था इतिहास में कम ही दिखती है तथा हम आज भी अपने शहरी नियोजन में इन विशेषताओं को सम्मिलित करने का प्रयास करते हैं।

निष्कर्ष ठीक है

3

Q→5→ जेट धाराएं क्या हैं? इनके जलवायु महत्व पर चर्चा कीजिए। (150 w, 10 m)

जेट धाराएँ पृथ्वी की सतह से 10-20 कि.मी. ऊँचाई पर अत्यंत तेजी से बहने वाली हवाएँ हैं। इनकी उत्पत्ति अलग-अलग तापमान वाली वायुराशियों के मिलने से होती है।

जलवायु पर प्रभाव →

1) जेट धाराएँ मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों में शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवात की उत्पत्ति में सहायक हैं, जो वहाँ की जलवायु का प्रमुख निर्धारक है।

2) उपोष्ण पछुआ जेट धारा भू-मध्य सागर से जल लेकर भारत में पश्चिमी विक्षोभ के द्वारा शीत वर्षा कराती है, जो हिमालयी कृषि (सेब आदि) महत्वपूर्ण है।

3) उष्ण कटिबंधीय पूर्वी जेट धाराएं भारतीय मानसून का चक्र पूर्ण करती हैं तथा वर्षा बढ़ाने में सहायक हैं।

4) जेट धाराएं कुछ ओजोन क्षयकारी पदार्थों को समतापमंडल में ले आती हैं, जो ओजोन क्षय हेतु उत्तरदायी है।

स्पष्ट है कि वैश्विक परिसंचरण के प्रमुख अंग के रूप में जेट धाराएं महत्वपूर्ण हैं तथा इन पर और अध्ययन किए जा रहे हैं।

3

Q→6→ मथुरा व अमरावती कला शैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (150 ω, 10m)

मौर्योत्तर काल में भारतीय कला के तीन प्रमुख केंद्र गांधार, मथुरा व अमरावती अपनी सर्वोत्कृष्ट छाप छोड़ रहे थे। मथुरा व अमरावती कलाएँ मौर्योत्तर काल के बाद भी चलती रहीं।

के समकाल का समाधान
संक्षिप्त विशेषताओं के साथ प्रभावी पुनः आरम्भ करें

1) **मथुरा कला** → मुख्यतः कुषाणों के संरक्षण में इसका विकास हुआ तथा लाल बलुआ पत्थर से मूर्तियाँ बनायी गयीं।

→ 1) केंद्र → मथुरा, कौशांबी, श्रावस्ती, सारनाथ आदि।

2) विषय → बौद्ध, जैन व ब्राह्मण धर्म तथा लोक देवी देवता।

3) विशेषताएँ - i) बुद्ध की आदर्शवादी मूर्तियाँ, जिनमें ध्यानावस्था में बुद्ध, पीछे आभामंडल, कंधे वस्त्र पहने दिखाया गया।

ii) जैन मूर्तियों में श्रीवत्स चिन्ह (Δ) तथा कार्यो कायोत्सर्ग मुद्रा।

iii) शिव व विष्णु की उनके अस्त्रों के साथ।

good इतिहास हेतु
प्रभावशाली है
d
अच्छा प्रयास

अमरावती शैली → सातवाहन व इक्ष्वाकुओं के समय विकास तथा मुख्यतः संगमरमर का प्रयोग।

1) केंद्र → नागार्जुनकोंडा, अमरावती, भट्टिप्रोलु आदि।

2) विषय → जातक कथाओं की घटनाएँ व लोकजीवन।

3) विशेषताएँ → पतले व गतिमान चित्र तथा त्रिभंग मुद्रा में चित्र।

अन्य → शारीरिक सौंदर्य, कामुकता, दरबार चित्रण इत्यादि।

भारत के सांस्कृतिक इतिहास की गौरवशाली परंपरा में मथुरा व अमरावती की इन कलाओं का भी अद्वितीय स्थान है।

Q→7→ भारत छोड़ो आंदोलन की प्रकृति पर विचार कीजिए। (150 W, 10M)

8 अगस्त 1942 को मुंबई के ग्वालियर टैंक से शुरु भारत छोड़ो आंदोलन अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय संघर्ष की सबसे मुखर अभिव्यक्ति रही, जिसमें अंग्रेजी दमन में लगभग 10,000 भारतीय शहीद हुए।

भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि के साथ शुरुआत करें

↳ आंदोलन की प्रकृति→

1) आंदोलन की अगली ही सुबह गांधी जी समेत समस्त

बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए, इसलिए आंदोलन जनता द्वारा ही प्रेरित हुआ।

स्वतः स्फूर्त

4) आंदोलन, गांधी के आंदोलनों का सबसे हिंसक आंदोलन था, पर उसकी आलोचना न करके गांधी जी ने उसे 'दमन की विरुद्ध प्रतिक्रिया' बताया।

जन आन्दोलन / के आन्दोलन में / आन्दोलन की विशेषताओं का वर्णन करो

3) जे.पी., राममनोहर लोहिया, उषा मेहता, बीजू पटनायक जैसे नेताओं ने भूमिगत गतिविधियों के माध्यम से संघर्ष किया। जैसे - उषा मेहता द्वारा बंबई में रेडियो स्टेशन की स्थापना।

5) देशभर में कई स्थानों पर समानांतर सरकारों की भी स्थापना की गई। जैसे - महाराष्ट्र में यशवंत राव चव्हाण द्वारा।

इस प्रकार भारत छोड़ो आंदोलन पहला वह संघर्ष था, जिसने अंग्रेजों को एहसास दिलाया कि अब भारत पर ज्यादा दिन तक शासन कर पाना उनके लिए नामुमकिन हो गया।

3.5

Q→8→ लौह और इस्पात उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों पर प्रकाश डालिए तथा पूरे भारत में उनकी वितरण बताइए। (150 w, 10m)

लौह इस्पात उद्योग एक आधारभूत उद्योग है जिनके उत्पाद का प्रयोग अन्य उद्योगों द्वारा कच्चे माल के रूप में किया जाता है तथा ये किसी अर्थव्यवस्था हेतु एक प्रमुख उद्योग है।

अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक →

1) चूंकि, यह उद्योग भार ह्रासी उद्योग है अर्थात, कच्चे माल का वजन उत्पाद से ज्यादा होता है तो ज्यादातर उद्योग कच्चे माल स्रोतों के पास है।

2) उद्योग हेतु सस्ते श्रम की उपलब्धता भी एक महत्वपूर्ण अवस्थिति निर्धारक है।

3) जल स्रोत की उपलब्धता व बड़े बाजारों से संपर्क वाले मार्गों के पास भी उनकी स्थापना हुई है।

4) वर्तमान में मिनी लौह इस्पात उद्योग की स्थापना है, इसलिए शहरों के निकट भी उद्योगों की स्थापना हो रही है।

विभिन्न उदा के साथ स्पष्ट उल्लेख करना उचित होगा
जैसे : कच्चामाल . स्टील प्लांट

5 भारत में वितरण →

1) ज्यादातर उद्योग कच्चे माल स्रोत के पास हैं। जैसे - TISCO, दुर्गापुर संयंत्र, राउरकेला संयंत्र।

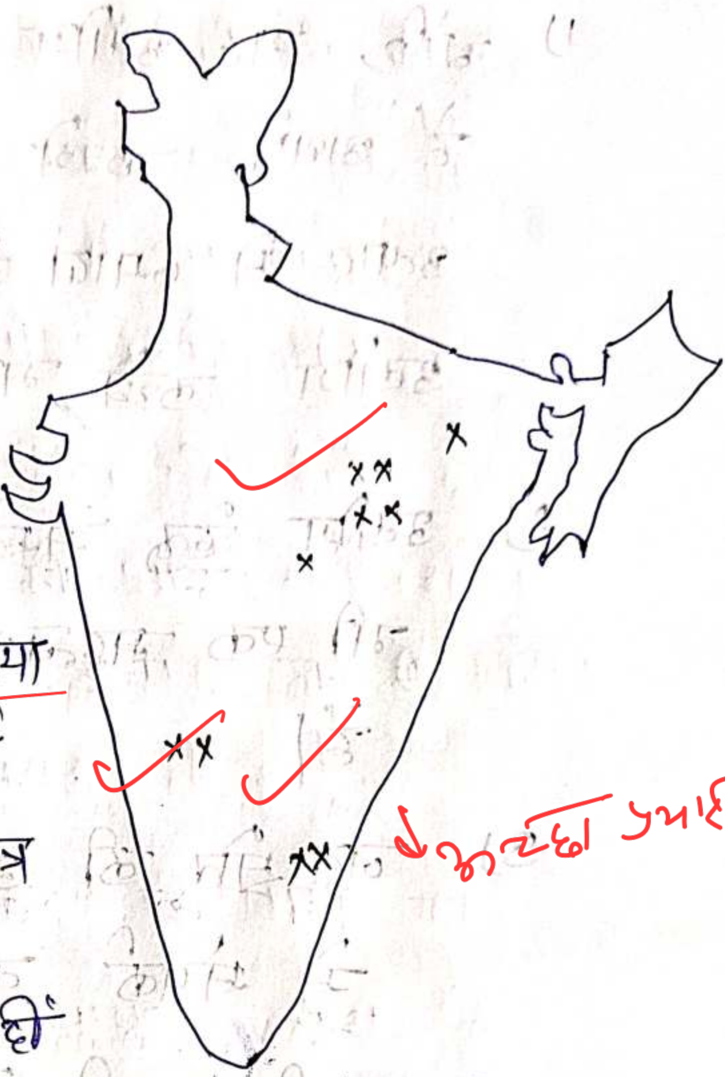

2) इसके अलावा विश्वेश्वरैया आयरन एंड स्टील वर्क्स (कर्नाटक) जैसे संयंत्र मुख्य कच्चे माल स्रोत के पास नहीं है पर अन्य कच्चे माल के स्रोत के पास है।

अच्छा प्रयास

5

3) मुंबई व अहमदाबाद जैसे बाजारों के पास भी अधिक उद्योग लगाए जा रहे हैं।

वितरण को स्पष्टतया दर्शाया गया है

लौह इस्पात उद्योग की असीम संभावनाओं के बाद भी उसकी क्षमता

का पूर्ण दोहन न कर पाना हमारी कमी रही है, जिस पर सुधार करने की आवश्यकता है।

Q→1→ उपयुक्त साक्ष्यों की सहायता से सागर नितल प्रसरण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। (150w, 10m)

वेगनर द्वारा दिए गए महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत की व्याख्या के दौरान आई कई अवधारणाओं में से सबसे प्रमुख खोज थी हैरी हेस द्वारा सागर नितल विस्तार का सिद्धांत दिया जाना जिसके लिए आर्नेस्ट वीनीस के चुंबकीय विलोमता के सिद्धांतों को उन्होंने आधार बनाया।

↳ सागर नितल विस्तार के पक्ष में साक्ष्य →

1) रेडियोमेट्रिक डेटिंग विधि से ज्ञात हुआ कि महासागरों की चट्टानें, महाद्वीपों की तुलना में नवीन हैं, मानो वहाँ नयी चट्टानें बन रही हैं।

2) मध्य सागरीय कटक के दोनों ओर की चट्टानों की आयु, चुंबकीयता आदि समान है अर्थात, नई चट्टानें लगातार पीछे खिसक रही हैं।

3) मध्य सागरीय कटक के पास की चट्टानों की आयु, भ्रंश के पास ~~स्थिति~~ स्थित चट्टानों से कम है तथा महासागरीय अवसाद भी कम हैं।

ये साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि नीचे से मैग्मा निकलकर

3.5

प्लेटों का संचलन करता है जो मैग्मा के पास नीचे समाकर पुनः मैग्मा बनती है, इस प्रकार सागरीय नितल का विस्तार होता रहता है।

Q→10→ 'पिछले दो दशकों में दक्षिण एशिया में बाढ़ का ज्यादा असर शहरी इलाकों में देखा जा रहा है।" इस कथन के आलोक में नगरीय बाढ़ के कारणों की विवेचना कीजिए तथा उससे निपटने के उपायों का सुझाव भी दीजिए।

'बाढ़ एक प्राकृतिक नहीं मानवीय आपदा है।' इस कथन की पुष्टि विश्व के विकासशील देशों के शहर करते रहते हैं। दक्षिण एशिया के प्रमुख शहरों जैसे - मुंबई, चेन्नई, ढाका, कराची जैसे शहरों में

Phenomena लिखें

भूमिका में शहरी बाढ़ को स्पष्ट करें

पिछले कुछ वर्षों में बढ़ती नगरीय बाढ़ ने स्थिति और खराब की है। उदाहरण भी दें मुम्बई, पटना

↳ **कारण →**

1) सबसे प्रमुख कारण अवैज्ञानिक शहरी नियोजन है। जिसमें शहरों से जल स्रोत तक जल निकासी की कोई समुचित व्यवस्था नहीं की जाती। [मानवजनित एवं प्राकृतिक कारणों को अलग से लिखना चाहिए]

2) लगातार बढ़ता जनसंख्या दबाव।

3) लोगों की अवैज्ञानिक आदतों के कारण पक्षपलावनो ; मेनहोल का जाम हो जाना। eg - प्लास्टिक प्रदूषण।

4) खराब अवसंरचना, जैसे - पाइप फूट जाना।

मानवजनित → आर्द्रभूमि अतिक्रमण, जल मिलाकर ↓ हरित आवरण ↓ इत्यादि

↳ उपाय → 1) शहर के आस-पास यदि जलस्रोत न हो तो कृत्रिम जलस्रोत का निर्माण व वहाँ तक जल निकायों की व्यवस्था।

2) जनसंख्या का वैज्ञानिक नियोजन

3) अवसंरचनात्मक सुधार।

4) वर्षा के मौसम से पहले जागरूकता अभियान तथा नालियों की सफाई।

जलवायु परिवर्तन के कारण गंभीर होती परिस्थितियों को अवैज्ञानिक शहरीकरण और बढ़ाता है। इसलिए आवश्यकता है वैज्ञानिक शहरों तथा लोगों में पर्यावरण संवेदी सोच का विकास करने की।

उपाय → स्पंज सिटी, जल संरक्षण, नगर नियोजन इत्यादि

3

3 सुझावों की दिशा में मिलाकर

6/7

Q→ 11→ बौद्ध सिद्धांत, ब्राह्मणवादी परंपराओं की तुलना में सामाजिक रूप से अधिक समावेशी थे, पर इसका उद्देश्य सामाजिक मतभेदों को समाप्त करना नहीं था परीक्षण कीजिए (250w, 15m)

ब्राह्मणवादी परंपरा में व्याप्त कुरीतियों के परिणामस्वरूप पाँचवी-छठी सदी ईसा पूर्व कई नए मतों का उदय हुआ जिसमें प्रमुख गौतम बुद्ध के नेतृत्व में बौद्ध धर्म था। बुद्ध ने जीवन को नए अर्थों में व्याख्या की तथा चार आर्यसत्य दिए व अनुयायियों हेतु अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया।

बौद्ध धर्म अपने कई सिद्धांतों के कारण ब्राह्मणवादी परंपरा से ज्यादा समावेशी था →

1) बौद्ध धर्म में जन्म के आधार पर भेदभाव नहीं स्वीकारा गया था। जबकि ब्राह्मण धर्म में यह मान्य था।

2) बौद्ध मत ने स्त्रियों, शूद्रों, दासों सभी के लिए अपने मठ के दरवाजे खुले ~~रखे~~ रखे जबकि ब्राह्मण परंपरा में स्त्रियों व शूद्रों की स्थिति निम्न थी।

3) ब्राह्मणवादी परंपरा के विपरीत बौद्ध धर्म में अनुष्ठानों व पशु बलि का विरोध किया।

अन्य – बौद्ध आम भाषा → प्राकृत
ब्राह्मण उच्च वर्ग → संस्कृत

पर इन सभी विशेषताओं के बावजूद अपने मूल रूप में इसका उद्देश्य कोई बड़ा सामाजिक परिवर्तन करना नहीं था, बल्कि यथास्थितिवाद को बनाए रखना था। इसके उदाहरण निम्न हैं :-

1) संघ में प्रवेश के लिए दासों को अपने स्वामी से, स्त्रियों को अपने पति से आज्ञा लेने की अनिवार्यता।

2) संघ में ज्यादातर ब्राह्मण, क्षत्रिय वर्ण के लोग ही शामिल हुए।

3) बुद्ध द्वारा राज्य संरक्षण व राजाओं के उपहार, स्वीकार किया गया।

* महिलाओं को आरंभ में संघ में प्रवेश नहीं ✓

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बुद्ध के चमत्कारी व्यक्तित्व से प्रारंभ बौद्ध मत समाज के स्तर पर हर वर्ग से नहीं जुड़ पाया तथा आगे चलकर महायान ने उसे और विकृत किया पर भारतीय दर्शन परंपरा में बौद्ध मत का स्थान अद्वितीय है।

6.5

Q→12→ "उपनिवेशवाद, भारत के आर्थिक विकास में मुख्य बाधा थी।" इस कथन के आलोक में नरपंथियों की उस भूमिका को उजागर कीजिए जिसमें उन्होंने उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना प्रस्तुत की। (250 W, 15 M)

19वीं सदी में ब्रिटेन से शुरू हुई औद्योगिक क्रांति नामक क्रांतिकारी घटना, धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों व अमेरिका तक पहुंची तथा सभी देश औद्योगीकृत तथा आर्थिक रूप से विकसित होते गए। पर इसी अवधि में भारत कच्चा माल व सस्ता

उपनिवेशवाद की (timeline) 5 है explain करें

श्रम के होते हुए भी गरीब रहा, जिसके पीछे भारत के अंग्रेजों के उपनिवेश बनने को माना गया है।

→ उपनिवेशवाद : आर्थिक विकास के समक्ष बाधा →

1) भारत का शासन भारत के हितों के अनुरूप न होकर ब्रिटिश हितों के अनुरूप हो रहा था, इसलिए भारतीयों को न नीतियों के रूप में समर्थन मिला व न ही छूट रूपी प्रोत्साहन।

मुख्य बिंदुओं को जोड़ें : धन निकासी, भारतीय पूंजी को स्थानांतरित करना, हस्तशिल्प एवं दस्तकारी

2) भारतीय कच्चे माल को निर्यात कर ब्रिटिश कंपनियों के विकास में प्रयोग किया गया।

3) ब्रिटेन निर्मित वस्तुओं पर कर हटाकर भारतीय बाजारों में भरा गया तथा भारतीय

वस्तुओं के निर्यात पर भारी कर लगाया गया।

4) कंपनी सेवकों के वेतन भत्ते, 'होम खर्च' आदि के नाम पर भी भारत का धन ब्रिटेन भेजा गया।

परंतु आरंभिक उदारवादी राष्ट्रवादियों ने इसको समझा व इस मुद्दे को जनता के समक्ष रखा।
दादाभाई नौरोजी ने 'ड्रेन आफ वेल्थ' सिद्धांत द्वारा भारतीय धन के विदेश भेजे जाने की बात बताई तो आर. सी. दत्त ने 'इकोनामिक हिस्ट्री आफ इंडिया' में 1757 से अंग्रेजों

के शोषण को उजागर किया।
सुब्रह्मण्यम अय्यर व एम. जी. रानाडे
भी इस दिशा में सक्रिय रहे।

इस दिशा में योगदान सराहनीय है

आरंभिक उदारवादियों ने ही
प्रथम बार अंग्रेजों के शोषणकारी
चरित्र को उजागर कर ब्रिटिश
व भारतीय हितों के विरोधाभास
को स्पष्ट किया, जिस पर हमारा
स्वाधीनता आंदोलन प्रेरित हुआ।

6

सामाजिक एवं राजनीतिक समस्या के मूल में आर्थिक समस्या को उजागर करने की दिशा में निर्णायक

Q→13→ गुप्त युग को अक्सर सांस्कृतिक विकास के संदर्भ में शास्त्रीय युग (क्लासिकल ऐज) के रूप में वर्णित किया जाता है। चर्चा कीजिए। (250w, 15m)

गुप्त काल को अक्सर भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता है। पर यदि हम राजनीतिक व सामाजिक स्तर पर प्रगति देखें तो निश्चय ही यह उपमा गलत प्रतीत होती है, परंतु यदि गुप्त काल की कला, साहित्य, धर्म आदि संस्कृति के तत्वों का विश्लेषण करें तो निश्चय ही हमारे सांस्कृतिक विकास का यह शास्त्रीय युग है।

↳ सांस्कृतिक विशेषताएँ →

1) **कला** → i) पहली बार मंदिर निर्माण की शुरुआत। जिनमें पंचायतन शैली के मंदिर; वर्गाकार गर्भगृह, शिखर आदि नागर शैली के प्रवर्तक दिखते हैं जो गुप्तोत्तर काल में चरम पर पहुँची।

जैसे - देवगढ़ का विष्णु मंदिर, एरण का विष्णु मंदिर, कानपुर व भितरगाँव के ईंट के मंदिर।

ii) मथुरा, मूर्ति कला के केंद्र के रूप में अपने चरम पर पहुँचा जिसने बाद में नालंदा कला को प्रभावित किया। पहले बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियाँ तथा शिव व विष्णु की प्रतिमाएँ प्रमुख हैं।

(कला — स्थापत्यकला, मूर्तिकला, वास्तुकला)

शास्त्रीय युग!

सारनाथ मूर्तिकला की नवीन शैली गुप्त काल में विकसित

i) साहित्य → कालिदास, भास, शूद्रक जैसे रचनाकारों ने इस काल को साहित्य का स्वर्णयुग बना दिया। इस युग के साहित्यों का अध्ययन यूरोपियों ने किया और पहली बार भारतीय परंपरा के महत्व को समझा।

आर्य भट्ट का उल्लेख
वृहत परिशिष्ट में
आर्यभटीय

मेघदूतम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्, मृच्छकटिकम्, स्वप्नवासवदत्ता इस काल की प्रमुख रचनाएँ हैं।

ii) धर्म → यह काल भागवत धर्म के उदय का समय है जो ब्राह्मण धर्म की असमानताओं को मिटाता था। श्री कृष्ण की पूजा शुरू

5.5

व छी भी कर सकते तथा भ्रेम भक्ति भाव से समर्पण कर सकते थे।

स्पष्ट है संस्कृति के स्तर पर भारत को जितनी गौरवशाली विरासत गुप्तकाल से मिली उतनी किसी और युग से नहीं इसीलिए यह हमारे सांस्कृतिक विकास का स्वर्ण युग है।

निष्कर्ष लिखे हिन्दी में हैं।

Q→14→ हिमनद क्रिया से संबंधित विभिन्न अपरदन व निक्षेपण भू-आकृतियों की चर्चा कीजिए। (2007, 15m)

पृथ्वी पर ऊच्चावच के निर्माण के लिए उत्तरदायी बहिर्जात प्रक्रियाओं का एक रूप हिमनद द्वारा बनाई गई स्थलाकृतियाँ भी हैं। हिमनद, बर्फ के मोटे खंड होते हैं जो मुख्यतः पर्वतीय क्षेत्रों में अपरदन व निक्षेपण की प्रक्रिया द्वारा विविध भू-आकृतियों का निर्माण करते हैं।

5 हिमनद द्वारा निर्मित प्रमुख अपरदन स्थलाकृतियाँ →

1) सर्क → हिमनद की गति के कारण बनने वाले गड्ढे जिनके किनारे नुकीले होते हैं।

2) हिमनद झील → सर्क जैसे गड्ढों में पानी भरने से निर्मित झील।

3) हार्न / गिरि शृंग → जब किसी चोटी पर तीन ओर से अपरदन किया जाए तो बचा बीच का नुकीला भाग जैसे - माउंट एवरेस्ट की चोटी।

अपरदन कारी प्र. स्थलाकृतियाँ
5 वर्णन कीजिए
good

प्रमुख निक्षेपित स्थलाकृतियाँ →

1) **हिमोढ़** → हिमनद निक्षेपों का घाटी में कंकड़ या अन्य किसी भी क्रम में जमा होना।

2) **हिमानी धौत मैदान** → हिमनद निक्षेपों से निर्मित मैदान।

3) **एस्कर** → हिम पिघलने से किनारों पर बनी कंकड़ जैसी आकृतियाँ।

4) **ड्रमलिन** → बजरी, रेत व हिम मिलने से बनी कंकड़।

वर्णन सही दिशा में है

इस प्रकार हिमनद का लागातार खिसकना कई प्रकार

उपयोग का उपयोग अधिक संबंधी होगा

की दर्शनीय आकृतियों का निर्माण करता है, पर यदि वैश्विक तापन के कारण ये पिघलते गए तो हमारी अन्य समस्याओं के साथ भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ भी नकारात्मक रूप में प्रभावित होंगी। निष्कर्ष रखिए।

6.5

Q.15→ असहयोग आंदोलन अपनी विफलता के बावजूद राजनीतिक व सामाजिक महत्व रखता है। टिप्पणी। (250w, 15m)

महात्मा गाँधी के अधीन हुए स्वाधीनता आंदोलनों की कड़ी में पहला आंदोलन - असहयोग आंदोलन ही था। 1 सितंबर 1920 को इसे खिलाफत आंदोलन के साथ

प्रारंभ किया गया। अपने विस्तार के कारण यह राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचा व अंग्रेजों को पहली बार इतनी बड़ी चुनौती मिली।

↳ कार्यक्रम → गांधी जी का मानना था कि अंग्रेजों का भारत में शासन भारतीयों के सहयोग पर ही टिका हुआ है इसलिए उन्होंने देशवासियों से स्कूलों, कालेजों, अदालतों, सरकारी दफ्तरों का बहिष्कार करने की मांग की।

↳ राजनीतिक महत्व →

1) पहली बार कांग्रेस पार्टी ने भाषायी

आधार पर प्रांतों में खुद को संगठित किया तथा आम आदमी को शामिल करने पर जोर दिया।

राजनीतिक महत्व → संगठनात्मक परिवर्तन, जन आंदोलन की शुरुआत इत्यादि

2) भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख नेता के रूप में गांधी जी का उदय तथा सरदार पटेल, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, राजेंद्र प्रसाद जैसे नेताओं का शामिल होना।

3) छात्रों की भागीदारी स्वदेशी आंदोलन की तुलना में बढ़ी तथा मजदूरों की बड़ी मात्रा में सहभागिता रही।

↳ **सामाजिक महत्व →**

1) खिलाफत आंदोलन के कारण स्वाधीनता का एकमात्र आंदोलन जिसमें

हिन्दुओं बड़ी मात्रा में मुस्लिमों की सहभागिता रही।

2) स्त्री वर्ग पहली बार घरों से निकलकर आंदोलन बना।

3) पहला ऐसा आंदोलन जो ग्रामीण भारत तक पँहुचा व राष्ट्रीय चरित्र प्राप्त कर पाया।

(6) यद्यपि हिंसा की घटनाओं, अंग्रेजी दमन आदि कारणों से यह आंदोलन 12 फरवरी 1922 को वापस ले लिया गया पर इसने नेताओं को संगठित होकर लड़ने की प्रेरणा दी।

जन आन्दोलन की दिशा भी निर्धारित की।

Q→16→ क्रांतिकारी उग्रवाद ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ 20वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान अत्यधिक प्रेरित युवाओं द्वारा अपनाई गई राजनीतिक कार्यवाई का एक रूप था। इस संबंध में क्रांतिकारी प्रवृत्तियों के कारणों तथा इसके पतन के लिए जिम्मेदार कारकों पर चर्चा कीजिए (250 W, 15M)

20वीं सदी की शुरुआत में स्वदेशी आंदोलन से प्रेरित होकर युवाओं का एक बड़ा वर्ग स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा पर जल्द ही उन्हें निराश होना पड़ा। इनमें से कुछ प्रेरित युवाओं ने हिंसा व क्रांति के मार्ग से अंग्रेजों को भारत से निकालने का प्रयास किया व क्रांतिकारी आंदोलन शुरु किया।

अरविंद घोष, बारीन्द्र घोष,

सचीन सान्याल, अनंत कान्हेर, अजीत सिंह, चापेकर बंधु इसके प्रमुख नेता थे।

↳ कार्यवाही के प्रकार →

1) 'युगांतर' 'संध्या' जैसे पत्रों के माध्यम से जनता को हिंसा के लिए प्रेरित करना। जैसे- युगांतर में 30 करोड़ भारतीयों के 60 करोड़ हाथों को अंग्रेजों के विरुद्ध उठाने का आह्वान किया गया।

2) व्यक्तिगत स्तर पर अंग्रेजी अधिकारियों की हत्या करना।
↳ अनंत कान्हेर द्वारा नासिक के गवर्नर की हत्या।

3) विदेशों में भी यह आंदोलन गदर आदि आंदोलनों के रूप में सक्रिय रहा।

कार्यवाही के प्रकार की रणनीति / चरणबद्ध → अच्छा प्रयास

↳ उदय के कारण →

1) नरमपंथी व गरमपंथी नेताओं द्वारा उपयुक्त नेतृत्व न कर पाने के कारण निराशा।

2) अंग्रेजों का दमनकारी व शोषणकारी चरित्र।

3) विदेश में ऐसे उदाहरणों का प्रभाव।

जैसे → मैजिनी के 'तरुण इटली' की तर्ज पर वीर सावरकर द्वारा 'अभिनव भारत' की स्थापना।

4) योग्य प्रेरक नेतृत्व का होना।

↳ अरविंद घोष का स्वयं जेल जाना।

↳ वीर सावरकर की गिरफ्तारी।

परन्तु प्रथम विश्व युद्ध आते-आते यह आंदोलन ठंडा पड़ने लगा जिसके पीछे निम्न कारण

जिम्मेदार थे-

1) अंग्रेजों द्वारा क्रूरतापूर्वक व निर्ममता से दमन। गदर आंदोलन का इसी प्रकार दमन किया गया तथा खुदीराम बोस जैसे कई क्रांतिकारियों को फांसी दी गई।

2) जनता के बड़े वर्ग का उनसे न जुड़ना।

3) 1915 तक बड़े नेताओं की गिरफ्तारी या हत्या के कारण नेतृत्व विहीन होना।

क्रांतिकारियों का आंदोलन भले 1915 तक थम गया पर भारत के महान शहीदों भगत सिंह,

ब्रिटिश साम्राज्य के सही स्वरूप को उजागर करने की दिशा में भी भूमिका थी

5.5

चंद्रशेखर आजाद के लिए भविष्य में यही आंदोलन प्रेरणास्रोत बना।

Q→17→ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने 20वीं सदी के आरम्भ में स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत के साथ बड़ी प्रगति की।(250w, 15m)

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की शुरुआत यूँ तो 1857 की क्रांति के साथ ही हुई थी, जिसमें 1885 में कांग्रेस की स्थापना अगला महत्वपूर्ण चरण था। पर इस आंदोलन की दशा व दिशा में निर्णायक 1905 में शुरू हुआ स्वदेशी आंदोलन ही रहा।

स्वदेशी आन्दोलन की पृष्ठभूमि आवश्यक
शुरुआत
इन्ही

↳ उदय के कारण →

1) तत्कालीन कारण लार्ड कर्जन द्वारा प्रशासनिक कारणों का हवाला देते हुए बंगाल का विभाजन किया जाना था, पर ऐसा राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने तथा हिंदू- मुस्लिम संघर्ष पैदा करने के लिए किया गया था।

2) अंग्रेजों के कुछ निर्णय जो उनके शोषण की ओर बढ़ रहे थे-

(क) चापेकर बंधुओं को फांसी

(ख) 1899 में राजद्रोह की धारा (IPC -124 A) जोड़ना।

(ग) 1902 में कलकत्ता नगर निगम में सीटें घटाना।

स्वदेशी आन्दोलन की उपलब्धियाँ :-

बहिष्कार, जन भागीदारी, महिलाओं की राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदारी, स्वदेशी।

3) बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय जैसे प्रबुद्ध व संघर्षशील नेतृत्व वर्ग का उदय।

↳ कार्यक्रम →

1) स्वयंसेवक समितियों के माध्यम से जनता को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी अपनाने की प्रेरणा तथा शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाना। जैसे - अश्विनी कुमार उपाध्याय की स्वदेश बांधव समिति।

2) कलकत्ता में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना व स्वदेशी शिक्षा पर जोर।

3) पी. सी. द्वारा 'बंगाल केमिकल स्टोर्स' तथा सुब्रमण्यम अय्यर द्वारा स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी की स्थापना।

इस आंदोलन में हिंदू प्रतीकों के प्रयोग के कारण मुस्लिमों का अलग होना, कांग्रेस में मतभेद व 1907 के बाद नेतृत्व विहीन हो जाना जैसी कमियाँ भी रहीं।

स्वदेशी आंदोलन के स्वदेशी पर जोर तथा निष्क्रिय प्रतिरोध जैसे आधारों पर गांधी जी ने आगे स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व किया, इन अर्थों में यह महत्वपूर्ण है।

स्वदेशी आन्दोलन के बहुआयामी योगदान एवं कार्यक्षमों की दिशा में सार्थक है।

5

प्रश्न18 → ऊष्ण कटिबंधीय चक्रवातों के बनने के कारणों की व्याख्या कीजिए तथा बताइए कि बंगाल की खाड़ी में चक्रवात ज्यादा क्यों आते हैं। (250w, 15m)

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात विश्व के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों (30° उत्तर - 30° दक्षिण) में समुद्र के ऊपर निर्मित होते हैं। तथा तटों से टकराकर भारी वर्षा व तेज हवाओं का कारण बनते हैं। उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र के मौसम निर्धारण में इनकी प्रमुख भूमिका होती है।

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात की व्याख्या करने की दिशा में रखना है

↳ उत्पत्ति हेतु आवश्यक कारक →

↳ समुद्री सतह का तापमान 30-35°C होना चाहिए

27°C औसत

⇓

जिससे निम्न दाब का क्षेत्र

बन सके

आवश्यक कारक

27°C औसत तापमान

कोरिओलिस बल

निम्न दाब से गंद्रमार्ग

↓

निम्न दाब क्षेत्र के कारण वायु का आरोहन (ऊपर उठना) होगा

↓

ऊपर उठती वायु को समुद्र की नमी के कारण संघनन की गुप्त ऊष्मा मिलेगी

↓

ऊपर प्रतिचक्रवातीय स्थिति होगी जो आरोहन में मदद करेगी।

↳ संरचना व गति →

• तूफान के केंद्र में अति निम्न दाब क्षेत्र होता है। वायु का सर्पिलाकार आरोहन होता है।

→ अच्छा प्रयास

↳ चक्रवात में पवनों की

गति उत्तरी गोलार्द्ध में घड़ी की सुई की दिशा के विपरीत तथा द० गोलार्द्ध में दिशा में होती है।

↳ बंगाल की खाड़ी में चक्रवात ज्यादा आने के कारण →

1) अरब सागर की तुलना में छोटा आकार जिससे तापमान ज्यादा।

2) समुद्र तल का उथला होना।

3) उत्तर पश्चिम भारत की गर्म हवाओं का यहाँ न आना, जो चक्रवात का विकास रोकती है।

4 कारणों की व्याख्या → अच्छी प्रस्तुति 7

इस प्रकार उष्ण कटिबंधीय चक्रवात भारतीय मौसम को भी प्रभावित करता है तथा तटीय राज्यों में वर्षा का प्रमुख स्रोत है।

निष्कर्ष संतुलित है।

Q→19→ विभिन्न प्रकार के ज्वालामुखियों की चर्चा कीजिए तथा समझाइए कि विश्व के अधिकांश ज्वालामुखी परि प्रशांत पेटी में क्यों स्थित हैं। (2020, 15m)

पृथ्वी के भीतर से मैग्मा का अचानक विस्फोट ज्वालामुखी कहलाता है। ज्वालामुखी में ठोस (पायरोक्लास्टिक पदार्थ), द्रव (मैग्मा/लावा) तथा गैस (SO_2, CO_2, जलवाष्प आदि) तीनों तत्त्व होते हैं। यह धरती की सतह पर कई स्थलाकृतियों का निर्माण करता है तथा स्थानीय मौसम को भी प्रभावित करता है।

चित्र - ज्वालामुखी।

अच्छा प्रयास

ज्वालामुखियों के प्रकार →

1) **शील्ड ज्वालामुखी** → आमतौर पर ये ज्वालामुखी कम विस्फोटक होते हैं पर यदि पानी चला जाए तो विस्फोटक रूप ले लेते हैं।
जैसे – हवाईयन ज्वालामुखी।

2) **मिश्रित ज्वालामुखी** – ये सामान्य तौर पर विस्फोटक होते हैं तथा इनसे ठोस, द्रव, गैस तीनों प्रकार के पदार्थ निकलते हैं।

3) **काल्डेरा** → ये इतने विस्फोटक होते हैं कि ये स्वयं धँस जाते हैं।

4) **बेसाल्ट प्रवाह** → इसमें लावा बड़ी मात्रा में निकलकर आस-पास फैलता है।

उदा – दक्कन ट्रैप

5) <u>मध्य सागरीय कटक</u> – प्लेटों के अपसरण (दूर जाने) के कारण इनका निर्माण होता है।

विश्व के 90% भूकंप तथा 75% ज्वालामुखी परिप्रशांत पेटी में ही स्थित हैं। अधिकांश ज्वालामुखियों की यहाँ स्थिति के कारण →

परि-प्रशांत पेटी को (रिंग ऑफ फायर) कहते

1) ज्वालामुखी क्रिया मुख्यतः प्लेट विवर्तनकी के कारण होती है। तथा इस क्षेत्र में प्रशांत प्लेट की फिलीपीन प्लेट, भारतीय प्लेट, कोकोज प्लेट, नजका प्लेट से क्रिया होती है।

2) प्लेटों के आपस में टकराने पर प्रशांत प्लेट भारी होने के कारण प्रविष्ठित हो जाती है तथा

नीचे ज्यादा ताप होने के कारण पिघलकर पुन: मैग्मा बनकर ऊपर आती है।

5. परिक्षांत क्षेत्र में इसी कारण भूकंप आते हैं तथा ज्वालामुखी द्वीप, महासागरीय पर्वत जैसी स्थलाकृतियाँ हैं।

अत: ज्वालामुखी एक अंतर्जात प्रक्रिया है जिसके विस्फोट के कारण धरती की सतह पर कई प्रकार के सकारात्मक व नकारात्मक परिवर्तन होते हैं।

मैप को साथ दर्शाना अधिक प्रभावी होगा

निष्कर्ष ठीक है।

6.5

Q → 20 → 19वीं शताब्दी में आधुनिक शिक्षा के विकास के लिए उत्तरदायी कारकों की समालोचनात्मक समीक्षा कीजिए। (250w, 15m)

भारतीय इतिहास में 19वीं शताब्दी को नवजागरण का काल माना जाता है। जिसमें राजा राम मोहन राय, केशवचंद्र सेन, स्वामी विवेकानंद जैसी हस्तियों ने आधुनिक शिक्षा ग्रहण करके भारतीय समाज को अज्ञानता व अंधकार से बाहर निकालने के प्रयास किए साथ ही इस दौर में अंग्रेजों ने भी अपनी जरूरतों हेतु शिक्षा पर थोड़ा ध्यान दिया।

↳ उत्तरदायी कारक →

1) भारतीय कारक → क) राजा राम मोहन राय, अक्षय कुमार दत्त जैसे विद्वानों ने पश्चिम के संपर्क के कारण तर्कवाद, मानववाद व विज्ञानवाद की शिक्षा ग्रहण की तथा भारतीयों को अज्ञानता से निकालने हेतु प्रयास किए।

↳ जैसे - राजा राम मोहन राय द्वारा 1825 में स्थापित वेदांत कॉलेज।

ख) स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती जैसे विद्वानों ने भारतीयों को भारतीय परंपरा के साथ-साथ पश्चिम की शिक्षा देने का प्रयास किया। जैसे - आर्य समाज के स्कूल।

इस भाग को संक्षिप्त करें

2) अंग्रेजी प्रयास → अंग्रेजों ने 1813 के बाद एक सस्ते कर्मचारी वर्ग की तलाश में तथा भारतीय संस्कृति का पश्चिमीकरण करने के उद्देश्य से शिक्षा के क्षेत्र में कुछ कदम उठाए →

i) 1813 के चार्टर एक्ट में शिक्षा हेतु एक लाख रुपए का आवंटन।

ii) 1835 में मैकाले स्मरण पत्र के माध्यम से अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने के प्रयास।

iii) 1854 का वुड डिस्पैच जिसके तहत कॉलेजों की स्थापना तथा प्राथमिक शिक्षा भारतीय भाषाओं में देने की बात की गई।

अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई नीतियाँ स्वार्थ ही

↳ इस व्यवस्था की कमियाँ →

1) अंग्रेजों ने अधोगामी निस्पंदन का सिद्धांत अपनाया तथा कुछ ही लोगों को शिक्षित किया।

2) स्त्री शिक्षा की कोई बात नहीं की गई।

3) 1911 में भारत की 94.5 जनसंख्या निरक्षर थी।

19वीं सदी में निश्चित रूप से आधुनिक शिक्षा देने के प्रयास हुए पर ये समाज के कुछ ही वर्गों तक सीमित रहे, पर एक प्रबुद्ध मध्यवर्ग के उदय के कारण हमारे भावी स्वाधीनता आंदोलन को नेतृत्व मिला।

6

सही दिशा में है

आधुनिक शिक्षा की कुछ उपलब्धियों का प्रभावों का उल्लेख करें